ट, शिकोहाबाद द्वारा आयोजित

णक प्रतिष्ठा महोत्सव, शिकोहाबाद (उ.प्र.)

वार, दिनांक 2 दिसम्बर, 2004 तक)

ड़ा स्थल), बाईपास रोड, शिकोहाबाद (उ.प्र.)

ष श्री कानजी स्वामी के सदुपदेश से प्रभावित होकर, भगवान नेमिनाथ के गर्भ एवं जन्म कल्याणकों से क प्रतिष्ठा महोत्सव का आनंद प्रिय मंगल आयोजन अनेक नवीनताओं सहित होने जा रहा है; जिसमें ाथ श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान, श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान एवं श्री 1008 आदिनाथ भगवान की जायेंगे। अत: आप सभी तत्त्वरसिक महानुभाव हमारा भावभीना आमंत्रण स्वीकार कर अवश्य पधारें।

क कार्यक्रम

य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन

वजारोहण, कलशस्थापना, पंचपरमेष्ठी विधान, इन्द्र प्रतिष्ठा शोभायात्रा
ल्याणक की पूर्व क्रिया, इन्द्रसभा-राजसभा, 16 स्वप्नों का प्रदर्शन
अष्ट देवियों की मार्मिक तत्त्वचर्चा।
डव नृत्य, 1008 कलशों से जन्माभिषेक, पालनाझूलन।
णक की शोभायात्रा, दीक्षावन में वैराग्य प्रवचन।
, दिव्यध्वनि प्रसारण।
, श्रीजी विराजमान, जिनवाणी स्थापना, कलशारोहण, शांतियज्ञ।

प्रतिष्ठाचार्य एवं निर्देशक

बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद

स हयो गी

- पं. संजयकुमारजी शास्त्री, जेवर
- पं. ऋषभजी शास्त्री, छिंदवाड़ा
- पं. मनीषजी शास्त्री, पिड़ावा
- पं. सुबोधजी शास्त्री, शाहगढ़
- पं. सुनीलजी धवल, भोपाल
- ब्र. सुकुमालजी झांझरी, उज्जैन

प्रचार मंत्री
शरद कुमार जैन
मो. 9412167700

स्वागताध्यक्ष
कस्तुरचन्द जैन
(05676) 234347

स्वागत मंत्री
अनिलकुमार जैन
05676-234489

मंत्री
राकेशकुमार जैन
मो. 9412168046
के. के. जैन, फरीदाबाद
0129-3094050
रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर
02772-233062

ऑडीटर
नवीन जैन, दिल्ली
011-23529770

पंचकल्याणक महोत्सव समिति, शिकोहाबाद

क सूत्र

124-07562, 05676-234079, 238436

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 16

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

पहले किसी को सर्दी लगकर बुखार आता था, कँपकँपी छूटती थी तो उसे शीतज्वर कहा जाता था और पसीना आ जाए तो वह बुखार उतर जाता था। बचपन में जब हमें बुखार आता था तो तब खूब कपड़े ओढ़ाकर सुलाया जाता था। पसीना आ जाएगा तो बुखार उतर जाएगा ह्न यही माना जाता था। आचार्य यहाँ कह रहे हैं कि जिसका शीतज्वर शांत हो गया है; वह पसीना लाने के लिए उपाय क्यों करेगा ?

एक बुखार ऐसा है कि जिससे सारे शरीर में जलन होती है। आचार्य कहते हैं कि जिसका दाहज्वर दूर हो गया है, वह काँजी से शरीर के ताप को उतारता हुआ क्यों दिखाई देगा ? जिसके आँखों का दु:ख दूर हो गया है, वह बटाचूर्ण आँजता क्यों दिखाई देगा ? जिसका कर्णशूल नष्ट हो गया है, वह कान में बकरी की पेशाब क्यों डलवायेगा?

कान में डालों तो नाक और गले में भी पहुँच जाती है। यह शुद्ध और सात्त्विक भी नहीं है। रोग नहीं हो तो कोई ऐसा क्यों करेगा ? किन्तु ताप उतारने के लिए ही वे पसीना लेते देखे जाते हैं, शीतज्वर को दूर करने के लिए ही कांजी की मालिश करते देखे जाते हैं, आँख में बटाचूर्ण आँजते देखे जाते हैं और कान में बकरे की पेशाब डलवाते देखे जाते हैं; इससे यह सिद्ध होता है कि वे दु:खी हैं।

पाँचवाँ उदाहरण यह है कि जिसका घाव भर जाता है, वह लेप करता हुआ दिखाई नहीं देता है। जब घाव हो जाता है, तभी लेप लगाया जाता है।

इसप्रकार आचार्य ने पाँच उदाहरण देकर यह सिद्ध किया कि विषयों में प्रवृत्त जीव दुखी ही हैं।

जो सुखी हैं; उनके विषयों में व्यापार नहीं दिखना चाहिए; परन्तु चक्रवर्ती और इन्द्रों के विषयों में व्यापार देखने में आता है; इससे यह सिद्ध होता है कि वे स्वभाव से ही दु:खी हैं।

चक्रवर्ती की पट्टरानी रजस्वला नहीं होती, उसे मासिकधर्म नहीं होता, उसके कोई संतान भी नहीं होती।

यद्यपि संतान नहीं होना तो लोक में अच्छा नहीं माना जाता; तथापि शास्त्रों में यह लिखा है कि मासिकधर्म होना और सन्तान की उत्पत्ति ह्न इन दो कारणों से विषयभोग में बाधा पड़ती है; चक्रवर्ती को निरन्तर निर्बाध भोग उपलब्ध रहें, इसके लिए प्रकृति ने यह व्यवस्था की है।

चक्रवर्ती के ऐसे पुण्य का उदय है कि जिसके कारण उसके भोगों में कोई बाधा उपस्थित नहीं होती। कहने का आशय यह है कि उन्हें भोग की ऐसी निर्विघ्न व्यवस्था चाहिए। इसके आधार पर हम चक्रवर्ती व इन्द्र कितने दु:खी हैं; इसका अंदाजा लगा सकते हैं।

प्रश्न ह्न यह तो अतीन्द्रिय सुखाधिकार का प्रकरण है। इसमें दु:ख की चर्चा क्यों कर रहे हैं ?

उत्तर ह्न सम्पूर्ण जगत ने इस दु:ख को ही सुख मान रखा है। वह सुख वास्तविक सुख नहीं है और यह अतीन्द्रियसुख ही वास्तविक सुख है ह्न यह बात बताने के लिए यह चर्चा की जा रही है।

भगवान ऋषभदेव ने जब दीक्षा ली और जंगल में आहार के लिए नग्न घूमने लगे तो जगत को ऐसा लगता था कि बेचारे नग्न घूमते हैं, पहनने के लिए कपड़े तक नहीं हैं, सवारी नहीं है, पैर में जूते तक नहीं हैं, घर–स्त्री–पुत्र कुछ भी नहीं है। इन वस्तुओं के बिना ये कितने दुखी हैं? ह्न यह सोचकर सब लोग उन्हें यह सब देने के लिए तैयार थे।

सम्पूर्ण जगत तो यही मानता है कि इनके बिना ही सब जीव दु:खी हैं और उन्हें यह उपलब्ध करा देंगे तो सब सुखी हो जाएँगे।

इसप्रकार इन वस्तुओं को हमने सुख की निशानी मान लिया है। ये वस्तुएँ मुनिराजों के पास नहीं है; इसलिए उन्हें दु:खी मान लिया है। अरहंत और सिद्धों के पास भी नहीं है; इसलिए उन्हें भी दु:खी मान लिया है।

आचार्य कहते हैं कि संसारी को स्वभाव से ही दु:ख है। चक्रवर्ती और इन्द्रों का वैभव उनके दु:ख की निशानी है, सुख की नहीं। इससे यह सिद्ध हुआ कि जिनके इन्द्रियाँ जीवित हैं, ऐसे परोक्षज्ञानियों के दु:ख स्वाभाविक ही है।

यहाँ आचार्य ने इन्द्रियज्ञानवाले को परोक्षज्ञानी एवं अतीन्द्रिय ज्ञानवाले को प्रत्यक्षज्ञानी कहा है।

'इन्द्रियज्ञान ज्ञान नहीं है' ह्न यदि हम सर्वथा ऐसा मानेंगे तो परोक्षज्ञान ज्ञान ही सिद्ध नहीं होगा। अरहंतों के अतीन्द्रियज्ञान है अर्थात् प्रत्यक्षज्ञान है तथा संसारी के इन्द्रियज्ञान अर्थात् परोक्षज्ञान हैं ह्न आचार्यदेव ने यहाँ ऐसा भेद किया है। मति–श्रुतज्ञान परोक्षज्ञान हैं, चाहे वह सम्यग्दृष्टि के हो या मिथ्यादृष्टि के ? यदि सम्यग्दृष्टि को परोक्षज्ञान है तो उसे इन्द्रियज्ञान नहीं हैह्न ऐसा कैसे कहा जा सकता है ?

मतिज्ञान और श्रुतज्ञान दोनों परोक्षज्ञान हैं एवं अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान एकदेश प्रत्यक्ष हैं। अवधिज्ञान तथा मन:पर्ययज्ञान मात्र पर को ही जानते हैं। अत: सम्यग्दृष्टियों को तथा मुनिराजों को आत्मा का ज्ञान, सुख तथा अनुभव परोक्ष ही है। जबतक उन्हें केवलज्ञान प्रगट नहीं होता, तबतक वह परोक्ष ही रहता है।

पं. टोडरमलजी ने रहस्यपूर्ण चिट्ठी में इसे विस्तार से स्पष्ट किया है। उन्होंने लिखा है कि अनुभव में प्रत्यक्षपना संभव नहीं है। इन्द्रिय प्रत्यक्ष और सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष तो वह हो ही नहीं सकता। अध्यात्म की अपेक्षा कहें तो उसे अनुभव प्रत्यक्ष कहा जा सकता है; परन्तु वास्तव में वह परोक्ष ही है।

रहस्यपूर्ण चिट्ठी में लिखा है कि अनुभव प्रत्यक्ष में आत्मा उसप्रकार भी दिखाई नहीं देता है; जिसप्रकार आँखों से कोई चीज दिखती है। आँखों से इस रूमाल को देखने में जितनी स्पष्टता होती है, उतनी भी स्पष्टता आत्मा के अनुभव में नहीं होती। रूमाल के प्रदेश प्रत्यक्ष हो रहे हैं, इसके परमाणु दिख रहे हैं; अनुभव में तो आत्मा के प्रदेश भी नहीं दिखते।

६४ वीं गाथा के भावार्थ में लिखा है कि 'परोक्षज्ञानियों के स्वभाव से ही दु:ख है; क्योंकि उनके विषयों में रति वर्तती है। **कभी–कभी तो वे असह्य तृष्णा की दाह से मरने तक की परवाह न करके क्षणिक इन्द्रिय विषयों में कूद पड़ते हैं।** यदि उन्हें स्वभाव से ही दुख न हो तो विषयों में रति ही न होनी चाहिए।' **(क्रमश:)**

(संयम और विवेक दोनों स्कूल से लौटते हुये....)

– विराग शास्त्री, जबलपुर

संयम : चलो अच्छा हुआ, चार दिन की छुट्टी मिल गई दिवाली की।

विवेक : हाँ संयम ! कम से कम चार दिन तो पढ़ाई से चैन मिलेगा। वरना दिन रात पढ़ते-पढ़ते बोरिंग-सी होने लगती है।

संयम : अच्छा विवेक ! तू छुट्टी में क्या करेगा।

विवेक : क्या करना है ? दीपावली आ रही है, आज पापा से रुपये मांगूंगा और पटाखें ले आऊंगा। ढेर सारे पटाखे फोडने का अलग ही मजा है।

संयम : हाँ है न ? हत्या का मजा।

विवेक : क्या बकवास कर रहे हो ?

संयम : और नहीं तो क्या ? नाम विवेक और काम अविवेक।

विवेक : पता नहीं, जब से पाठशाला जाने लगे हो, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।

संयम : खराब नहीं सही हो गया है।

विवेक : समझ में नहीं आता, उल्लास के पर्व पर हत्या जैसी बातें कर रहे हो।

संयम : अच्छा विवेक ! तुम ही बताओ कि दीपावली पर्व क्यों मनाते हैं ?

विवेक : इसमें क्या है। सभी जानते हैं कि इस दिन भगवान महावीरस्वामी को मोक्ष हुआ था।

संयम : अच्छा ! सारा विश्व महावीर को किसलिये याद करता है ?

विवेक : उनके **अहिंसा** तथा **जीओ और जीने दो** के सिद्धान्त के कारण।

संयम : जरा सोचो ! जिन महावीरस्वामी ने सारे विश्व को अहिंसा का मार्ग दिखाया, हम उन्हीं के निर्वाण दिन पर अनंत जीवों की हत्या करते हैं।

विवेक : लेकिन यह आनंद का प्रतीक है कि हमारे महावीर भगवान को इस दिन मुक्ति मिली थी। अब जीव मरे तो इसमें हमारा क्या दोष ?

संयम : जिस आनंद पर्व को मनाने में अनंत जीवों की हत्या हो – ऐसा पर्व निर्वाण पर्व नहीं हत्या पर्व कहलायेगा।

विवेक : तुम्हारा मतलब हम शोक सभा मनायें !

संयम : तुम गलत समझ रहे हो। यह परम पवित्र पर्व है और उल्लास से ही मनाना चाहिये; परन्तु लाशों के ढेर पर संगीत क्या बजाना ?

विवेक : हाँ ! बात तो तुम्हारी ठीक है।

संयम : और तुम ही बताओ पटाखे फोडने का क्या फायदा है ? निर्दोष जीवों की हत्या हो जाती है, लोग जल जाते हैं, गन्दगी हो जाती है। सैंकड़ों घर जलते हैं और फायदा कुछ नहीं।

विवेक : हाँ संयम ! तुम ठीक कहते हो, अब मैं भी पटाखे नहीं जलाऊँगा।

संयम : अब तुम मेरे साथ चलना। हम मंदिरजी में पूजन करेंगे, पण्डितजी का प्रवचन सुनेंगे और भगवान महावीर जैसे बनने की भावना भायेंगे।

मूक जीवों की चीत्कार सुननेवाला कौन ? मानव होकर भी इतनी निर्दयता क्यों ?

- **क्या आपको जैन कहलाने का अधिकार है ?**
- **क्या आप भगवान महावीर को मानते हैं ?**
- **क्या आपके हृदय में करुणा है ?**
- **क्या आप मुनिराजों की वाणी पर श्रद्धा करते हैं ?**

यदि हाँ तो ह्न

- पटाखे फोडकर अनंत जीवों की हत्या करके आप क्या बताना चाहते हैं ?
- जीओ और जीने दो का अमर संदेश देनेवाले भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण दिवस पर हिंसा का ताण्डव मत करिये। हमें तो अग्नि की आंच भी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला डालते हैं। छोटी सी आवाज से हमारे बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनंत जीवों का मरण करने पर दया क्यों नहीं आती ?

जरा सोचिये ह्न पटाखे फोडने से क्या मिला ?

१. अनंत निर्दोष जीवों की हत्या।
२. वायू प्रदूषण ।
३. आग लगने से क्षति।
४. स्वास्थ्य हानि।
५. करोड़ों रुपयों का नुकसान।
६. अनंत पाप का बंध।
७. गंदगी का साम्राज्य।
८. आँखों पर बुरा असर।
९. मुनिराजों के उपदेशों की अवहेलना।
१०. भगवान की वाणी का अपमान।

क्या आप जानते हैं ? प्रतिवर्ष पटाखो से २ लाख लोग अपंग होते हैं, पटाखो की आग से देश में प्रतिवर्ष २०० करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान होता है, पटाखो से प्रतिवर्ष ७० हजार बच्चों के आँखों की रोशनी कम या समाप्त हो जाती है, पटाखा फैक्ट्री के कर्मचारियों की दुर्घटनाओं में मृत्यु हो जाती है।

अत: हमें ही सोचना है कि यह अहिंसा के सम्राट का निर्वाण महापर्व है या हिंसा के यमराज का ?

निवेदक – आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन (रजि.) सर्वोदय, ७०२, फूटाताल जबलपुर-२ (म.प्र.)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा आयोजित ह्न

शिखर शिविर सानन्द सम्पन्न

मधुबन (झारखण्ड) : यहाँ सम्मेदशिखर की तलहटी में दिनांक 8 अक्टूबर से 15 अक्टूबर, 2004 तक कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा आयोजित बृहत्आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं बाल संस्कार शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

दिनांक 8 अक्टूबर, 2004 को मध्यलोक जिनमंदिर के प्रांगण में श्री पवनकुमारजी जैन अलीगढ़ द्वारा झण्डारोहण किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री अभिनन्दनप्रसादजी सहारनपुर ने किया। शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री भीमजीभाई भगवानजीभाई शाह परिवार, लंदन थे।

शिविर में प्रतिदिन ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, ब्र. केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाड़ा, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

व्याख्यानमाला के माध्यम से पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' भोपाल, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित चन्दुभाई फतेपुर, पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री जेवर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर के मध्य दो दिन **सम्यग्दर्शन** एवं **सम्यग्ज्ञान** विषय पर विद्वत् सेमीनार रखा गया; जिसमें आमंत्रित विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। विद्वानों के माध्यम से ही एक दिन भजन संध्या का कार्यक्रम रखा गया; जिसमें पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, ब्र. सुमतप्रकाशजी आदि विद्वानों ने अपने भजन प्रस्तुत किये।

12 अक्टूबर को सभी शिविरार्थियों द्वारा सम्मेदशिखर की सामूहिक वंदना की गई। बाल संस्कार शिविर के अन्तर्गत 14 अक्टूबर को विशाल अहिंसा रैली निकाली गई; जिसमें लगभग 2000 बच्चों ने भाग लिया।

शिविर में पूरे देश से पधारे आत्मार्थियों के अतिरिक्त अमेरिका, इंग्लैण्ड एवं कनाडा से पधारे अनेकों मुमुक्षुओं ने भी धर्मलाभ लिया; जिनमें रश्मिनभाई एवं रोमिन भाई शाह लंदन का विशेष सहयोग रहा।

इस अवसर पर 1 लाख 50 हजार रुपयों का सत्साहित्य तथा प्रवचनों की 4 हजार सी.डी. कैसिट्स घर-घर पहुँचीं।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

09 से 12 नवम्बर	**देवलाली**	**महावीर निर्वाणोत्सव**
26 नव. से 2 दिस.	**शिकोहाबाद**	**पंचकल्याणक प्रतिष्ठा**
27 से 31 दिसम्बर	**देवलाली**	**विधान एवं शिविर**
08 से 09 जन.,05	**मुम्बई (कांदीवली)**	**डॉक्टरों का सम्मेलन**
07 से 13 फर.05	**दिल्ली**	**पंचकल्याणक प्रतिष्ठा**

हार्दिक शुभकामनायें !

1. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक डॉ. विमलकुमारजी जैन, जयपुर को शैक्षिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में शोधपूर्ण कार्य एवं उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिये **राजस्थान सरकार का सर्वोच्च राज्यस्तरीय पुरस्कार-2004** राजस्थान के राज्यपाल मदनलाल खुराना द्वारा, शिक्षामंत्री घनश्यामजी तिवाड़ी की अध्यक्षता एवं शिक्षा राज्यमंत्री वासुदेव देवनानी के विशिष्ट आतिथ्य में रजत प्रतीक चिन्ह, प्रशस्ति पत्र एवं नकदी प्रदानकर सम्मानित किया गया।

राजस्थान युवा छात्र संस्था द्वारा आपको **शिक्षा गौरव** एवं जयपुर मूर्तिकार समाज द्वारा **सरस्वती पुत्र** की उपाधि से अलंकृत किया गया।

इस अवसर पर राज्यपाल महोदय द्वारा डॉ. विमलकुमारजी की शोधपूर्ण कृति **अरुणोदय** का विमोचन भी किया गया।

2. वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के प्रबन्ध सम्पादक श्री संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा आयोजित **राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा** (NET) में चयन हो गया है। ज्ञातव्य है कि आपने जैनविश्वभारती, लाडनूं विश्वविद्यालय से एम. ए. के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन विषय में **वरीयता सूची में श्रेष्ठस्थान** प्राप्त किया था।

3. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री योगेशकुमार जैन, बरां का **कनिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति** (JRF) में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा चयन हो गया है तथा आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा जैनदर्शनाचार्य परीक्षा में **स्वर्णपदक** प्राप्त किया।

आप सभी की इस उपलब्धी पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट परिवार, श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न सम्पादक**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) नवम्बर (प्रथम) 2004
J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127